Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

॥ श्रीः ॥

श्रीमदमृतग्रन्थमालायाः (७)

सप्तमं पुष्पम् ।

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र—

महामहिम-आचार्य

श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीता

सिद्धमहामन्त्रस्वरूपिणी

श्रीपरशिवप्रार्थना

राष्ट्रभाषानुवादआंग्लरूपान्तरसहिता

सिद्धमन्त्रत्वप्राप्तीतिहाससहिता च

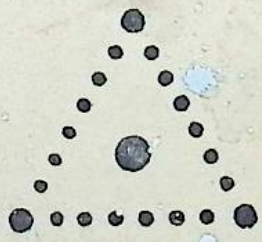

द्वितीय संस्करणम्] वि० सं० २०३५ [अमूल्यम्

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

नित्यकर्म प्रकाश

ले० भवानीशंकर त्रिवेदी

इस पुस्तक में प्रातः उठने से लेकर रात्रि शयन तक प्रातः स्मरण, स्नान सन्ध्या पञ्चमहायज्ञ दवार्चन, महामृत्युजंयजपविधि तथा आरतियाँ आदि हिन्दुओं के सभी आवश्यक नित्य कृत्यों का शास्त्रीय विधि के अनुसार सम्पूर्ण विधि विधान दिया गया है। साथ ही प्रत्येक मन्त्र का अर्थ भो सरलसुबोध भाषा में समझाया गया है। ५ अंशुओं (भागों) में मुद्रित इस परमोपयोगी पुस्तक का मूल्य ५.०० ।

प्राप्ति स्थान :

श्री रविशर्मा त्रिवेदी

जी-१८, दिलशाद कालौनी

शाहदरा, दिल्ली-३२

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

★ Śrīḥ ★

Śrimadamṛitagranthamālā (VII Volume)

ŚRIPARA-ŚIVA-PRĀRTHANĀ

(OF THE NATURE OF A SIDDHA-MAHĀMANTRA)

(Along with the historic anecdote that bespeaks of its effectiveness as a Siddha Mahāmantra)

Composed by
His Holiness Sarvatantrasvatantra
Anantaśri Amṛtavāgbhavāvārya ji Mahārāja

English Versoin by
Dr. Raghu Nath Sharma
M.A. Ph-D.
(Sanskrit Department, University of Delhi)

Published by
Shri Ravi Trivedi
M.A. (English, Hindi, Sanskrit)

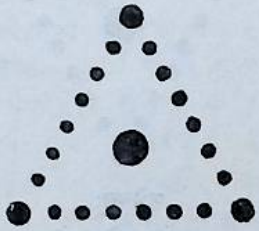

1st Edition with English Translation } **1978** { Available Free From G-18, Dilshad Colony Delhi-110032

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

॥ श्रीः ॥

प्रकाशकः—

रविशर्मा त्रिवेदी एम. ए.

(संस्कृत, हिन्दी-अंग्रेजी)

जी १८, दिलशाद, कालोनी

शहादरा, दिल्ली-३२

□

इस 'श्रीपरशिवप्रार्थना' के संमुद्रण का सम्पूर्ण आर्थिक व्यय मेरे प्रिय अनुज श्री भारतेन्दु जी ने किया है।

अतः उनको शतशः शुभाशीर्वाद।

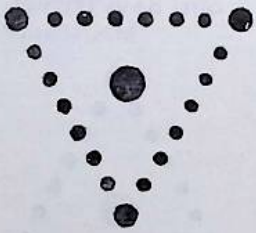

शुभेच्छुः

रवि त्रिवेदी

श्रीमदमृत वाग्भवाचार्य जयन्ती महोत्सव

(आषाढ़ शुक्ल १० सं० २०३५)

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्रकाशकीय निवेदन

इस परिवर्तनशील दुःखमय जगत् में सच्चा सुख ईश-प्रार्थना में ही है। गायत्री और महामृत्युञ्जय मन्त्र तथा श्रीरामरक्षा और श्री शिवमहिम्न-स्तोत्र को प्रकाश में लाकर नरदेहधारी महात्माओं ने युगों से संतप्त प्राणियों को शरण दी है। इन तपस्वी महात्माओं को भगवान् श्री रामकृष्ण परमहंसदेव उस विशाल पोत के समान बताते हैं, जो अपने साथ करोड़ों जीवों को भी संसार सागर से अनायास ही पार करा देते हैं। शिवस्वरूप इन महापुरुषों की ही कोटि में हमारे पूज्य गुरुदेव अनन्त श्रीविभूषित श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज आज भी लोकोपकार एवं लोक-कल्याण में रत हैं।

श्री गुरु महाराज जी ने वि. स. १९९० के वैशाख मास में भक्तों के कल्याणार्थ "प्रभो शंभो" जैसे सिद्ध मंत्र की रचना की। उसी दिन सांयकाल आप इस प्रार्थना के "बद्धादरकरम्" में संशोधन का विचार कर ही रहे थे कि दिव्य ऋषि देहधारी भगवान् ने साक्षात् प्रकट होकर आपको इस संशोधन से रोका। तदनन्तर श्री गुरु महाराज जी ने जिस भी आर्तजन को यह प्रार्थना बताई उसके असाध्य कष्ट भी दूर हो गये। भक्तों ने यह प्रार्थना लाखों की संख्या में प्रकाशित कर जनता का कल्याण किया है। अब पूज्य महाराज जी के जन्म-दिवस आगामी आषाढ़ शुक्ला दशमी वि. स. २०३५ के पुण्य अवसर पर उनके ही कर कमलों में अंग्रेजी रूपान्तर सहित "त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये" के अनुसार सादर समर्पित है।

मुझे बचपन में ही पूज्य पिताजी (श्री पं० भवानीशंकर जी त्रिवेदी) ने यह प्रार्थना कंठस्थ कराई। इसके विधान से अपरिचित मैं श्रद्धानुसार ही इस सिद्ध मंत्र का जप करता रहा। फलस्वरूप विविध विघ्नों से त्रस्त होकर भी यत्किंचित् विद्यार्जन कर सका। श्रीचरणों के आदेश से इस सिद्ध महामंत्र का उन्हीं के द्वारा प्रतिपादित जप-विधान निवेदित है। साधक भक्त को सोमवार अथवा किसी भी महाशिवरात्रि जैसे शुभदिन (जब चन्द्रमा जन्म

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

राशि से अष्टम न हो।), शिवालय में आशुतोष भगवान् शिव का पूजन कर मन में यह सोचते हुए कि भगवान् ही "प्रभो शंभो" की दीक्षा दे रहे हैं, इस सिद्ध मंत्र का अर्थसहित तीन वार पाठ करना चाहिए। तत्पश्चात् नित्य प्रति रात्रि को निन्द्रामग्न होने से पूर्व और प्रातः निद्रा त्यागकर शय्या पर ही इस सिद्ध मन्त्र का तीन बार पाठ करने से कष्ट निवारण हो जाता है। अन्य अभीष्ट कार्यो के लिए श्रद्धानुसार जप अधिक से अधिक संख्या में करना चाहिए। उदाहरणार्थ नित्य दो माला जपने से परीक्षा में निश्चित सफलता मिलती है। किसी भी कठिन दर्शनिक विषय को समझने से पूर्व ग्यारह बार पाठ से विषय सुगम हो जाता है।

इस सिद्धमन्त्र के पुनः प्रकाशन के लिए पूज्य पिताजी का प्रोत्साहन और आशीर्वाद ही इस कार्य को सफल बना सका। प्रकाशन व्यय मेरे प्रिय अनुज चि. भारतेन्दु शर्मा ने वहन किया है, उनके लिए भगवान् आशुतोष से प्रार्थना ही कर सकता हूं कि वे इनके जीवन में आशु कृपामृत वर्षा करें एवं सर्वविध सौख्य दीर्घायुवष्यादि प्रदान करें। प्रस्तुत अंग्रेजी रूपान्तर विद्वद्वर पूज्य डॉ० श्री रघुनाथ जी शर्मा ने अत्यन्त परिश्रम से प्रस्तुत किया है। धर्म, साधना और विद्वत्ता के मूर्तिमान स्वरूप आप साधक भक्तों और शोध-छात्रों के लिए एक महान् उपलब्धि तो हैं ही, मेरे लिए तो दिव्य उल्लास के स्रोत भी हैं। नहीं जानता कि आपके प्रति मैं किन शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करुं ? निरुपमा प्रिंटर्स के स्वामी श्री रामकृष्ण जी कौशिक ने "श्री परशिव प्रार्थना" के प्रकाशन में जो तत्परता दिखाई, तदर्थ आपका हार्दिक धन्यवाद।

कृपाकांक्षीः—

आषाढस्य प्रथम दिवसे २०३५ रवि त्रिवेदी

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ŚRĪHARIḤ

INTRODUCTION TO THE ENGLISH VERSION

Śiva is the ultimate resting-place for all the individuals, groping in the darkness and excessively tortured by the chains of births and deaths. For the Upaniṣads He is the "Tranquil, Śiva, Non-dualistic and the Fourth (the Turīya)" and as such the Ultimate Reality, the Brahman or the Supreme Self, responsible for the creation, the maintenance and the ultimate dissolution of the phenomenal world. It is this cosmic form of the Supreme Self in Śiva that assumes the different forms of Brahmā, Viṣṇu and Maheśa. As Śiva, the same Reality is the root Substance (Bimba) of all the shadows (Prati-bimbas). On physical plane, He assumes defenite forms, performs diverse sports and assumes different nomenclatures, like Rudra, Mahākāla, Mṛtyuñjaya, Mahāmṛtyuñjaya etc., for the benefit of His devotees. Those who seek a refuge in Him, for them He is the wish-fullfiling-tree, the Kalpa-vṛkṣa.

This Śiva, a bounteous God, has been eulogised by Sarvatantrasvatantra, H. H. Anantaśrī Amṛtavāgbhavācārya Jī Mahārāja, a prolific writer of Śiva-śakti-tattva, in one of his intuitional utterances, popularly regarded as a Siddha Mantra, the "Prabho Śambho—" etc. The historic anecdote connected therewith is indicative of the same being surcharged with divine spell. Many have got their desired objects by repeating the same as per procedure, verbally communicated by Ācārya Jī Mahārāja himself.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

The simple is procedure of chanting this Mantra is that a devotee should go to a Śiva temple on Monday or any auspicious day and worship Lord Śiva. Then he should mutter the Mantra thrice thinking that the Lord is very kindly initiating him in the same. Thereafter one should daily recite this Mantra thrice before going to bed at night and thrice before leaving the bed in the morning. For a sure success in any of the examinations one should do it at the rate of two Mālās (one Mālā consisting of 108 recitations) per day. Before starting any difficult text on Philosophy, one should repeat the Mantra eleven times. For other purposes the degree of devotion and recitations will accordingly help in positive.

I was initiated into the Mantra by my revered father in the year 1949, when I was a young child and a student of a primary standard. With confidence I can say that it works wonders.

This Siddha Mahā Mantra was printed a number of times with its Hindi translation. Those who do not know Hindi could not make a proper use of the same. It was, therefore, for their well-being in mind that this self was assigned the task of an English translation of the same. The Mantra with its English is definitely going to benefit many more in getting the Abhyudaya (pleasures of the mundane plane) and the Nihśreyasa (pleasures hereafter in the worlds beyond) as also the resultant Mokṣa (a state of total liberation and the Supreme Bliss).

Raghu Nath Sharma

New Delhi :
Jaiṣṭha Kṛṣṇapakṣa,
Somavatī Amāvāsyā of the
Vikram Saṁvat 2035.
(June 5, 1978)

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सिद्धमहामन्त्रप्राप्तीतिहासः

मन्निर्मितः प्रभोशम्भोश्लोको यत्सदयेच्छया ।
इष्टसिद्ध्यर्थं प्राप सिद्धमहामन्त्रस्वरूपताम् ॥१॥

हितायाऽऽस्तिकलोकानां वर्णयामि समासतः ।
नत्वा तत्पादयुगलं तद्वृत्तं विस्मयावहम् ॥२॥

सायन्तनं नित्यकृत्यं समाप्य समवस्थिते ।
स्वासने मय्यन्धकारावृते पूजागृहेऽमले ॥३॥

श्रीशिवप्रार्थनापद्ये प्रातरेव स्वनिर्मिते ।
अपशब्दं चिन्तयति सहसा दिव्यदेहवान् ॥४॥

जीर्णांशुकं जानुदघ्नं वसानो लम्बमेकतः ।
रोमगुच्छाचितबिलमहाश्रोत्रः शशिप्रभः ॥५॥

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

बर्बरप्रभरोमालिव्याप्तसर्वाङ्गविग्रहः ।
तिरस्कृततडिच्चञ्चत्कनीनिकविलोचनः ॥६॥

महात्मा प्रकटीभूय कोऽपि मत्सम्मुखं तदा ।
उच्चालयन् तर्जनीं स्वां मामुवाच सगर्जनम् ॥७॥

पद्यमेतन्नास्त्यशुद्धं न कार्यं परिवर्तनम् ।
एवं समासे सुमते ! कामशुद्धिं विशङ्कसे ॥८॥

इत्युक्त्वा यो दयार्द्रेण चक्षुषा वीक्ष्य मां पुनः ।
शम्पेव क्वाप्यगात् सद्य आश्चित्याऽलक्षितां गतिम् ॥९॥

अजानन्नपि तस्याऽहं नामधामादिकं मुहुः ।
प्रणमामि सदा भक्त्या रूपं वाक्यं च संस्मरन् ॥१०॥

नालागढे धर्मसभाभवने मासि माधवे ।
वृत्तं वृत्तं वैक्रमेऽब्दे ऋद्धिधैर्यमिते गते ॥११॥

आचार्य अमृतवाग्भवः

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

★ श्रीः ★

मन्त्र के इतिहास का भाषानुवादः

मेरा बनाया 'प्रभो ! शम्भो !' श्लोक जिसकी दयामय इच्छा से स्वेष्ट-सिद्धि के लिए सिद्धमहामन्त्रस्वरूप हो गया, उसका आश्चर्यजनक वृत्तान्त उनके चरणों को प्रणाम करके आस्तिक लोगों के हित के लिये संक्षेप से यहाँ मैं वर्णित कर रहा हूँ ।।१-२।।

सायंकाल का नित्य-कृत्य समाप्त कर अपने निर्मल पूजागृह में जहां अन्धकार भरा हुआ था मैं अपने आसन पर बैठा हुआ था। उसी दिन प्रातःकाल ही अपने बनाये श्री शिव की प्रार्थना-श्लोक ('प्रभो ! शम्भो !) में अशुद्धि को सोच रहा था, इतने में ही अकस्मात् एक दिव्य शरीरधारी घुटनों तक पुराना कपड़ा जिसका एक छोर नीचे लटक रहा था, पहने हुए, रोओं के गुच्छों से भरे हुये छिद्र वाले बड़े कान जिनके थे ऐसे पुरुष प्रकट हुए। उनका वर्ण पूर्ण चन्द्रमा की तरह चमकीला था। उनके सम्पूर्ण शरीर में घंघराले बाल भरे थे

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

और आँखों की पुतलियां बिजली की चमक से भी अधिक चमकीली थीं। ऐसे वे अज्ञात कोई महापुरुष मेरे सम्मुख प्रकट होकर अपनी तर्जनी उंगली को ऊंची उठाकर घुमाते हुए और बड़ी गर्जना के साथ मुझसे कहने लगे ॥ ३-७॥

यह श्लोक अशुद्ध नहीं है, उसमें कोई इधर-उधर परिवर्तन नहीं करना तुम तो बुद्धिमान् हो ऐसा समास करने पर ('बद्धादरकरं') कौनसी अशुद्धि की तुमको शंका हो रही है। इस तरह कहकर दयार्द्र-दृष्टि से एक बार मुझे फिर देखा और बिजली की तरह अदृश्य गति से वे कहीं चले गये, अदृश्य हो गये ॥८-९ ॥

उनका नाम और उनका स्थान कुछ भी मैं नहीं जानता, फिर भी बारम्बार श्रद्धा से उनके आदेश को और उनके स्वरूप को स्मरण करता हुआ उनको प्रणाम करता रहता हूँ। यह घटना संवत् १९९० वैशाख मास की है और मैं उस समय नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश) धर्मसभा भवन में था ॥ १०-११ ॥

[यह महामन्त्र कई लाख की संख्या में मुद्रित हो चुका है और लाखों लोगों ने इससे लाभ उठाया है, जैसे—परीक्षाओं में अच्छी श्रेणियों में उत्तीर्ण होना, मानसिक शान्ति, रोगनिवृत्ति, आर्थिक परिस्थिति का सुधार आदि। पचासों पुरुषों ने अपनी इच्छानुसार मुद्रित कर इसे प्रकाशित किया है। सीमाप्रान्त के एक ब्रह्मचारी ने तो मन्त्र का अनुवाद अपनी ओर से करके काबुल, कंधार आदि प्रान्तों में भी बंटवाया था। संस्कृत श्लोकबद्ध इतिहास का यह दूसरा संस्करण है और यह प्रार्थना-प्रणेता श्री आचार्य जी की रचना उनकी अनुमति से ही हम प्रकाशित कर रहे हैं।]

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

The historic anecdote of the Mantra

One (Lord Śiva) whose kind (graceful) desire has imparted the nature of Siddha Mahāmantra, for attaining the desired fruits, to the verse 'Prabho Śambho' by me; (1)

Offering salutations to His lotus feet, I am writing the wonderful anecdote connected therewith in nutshell for the benefit of the Āstikas (the belivers). (2)

Having accomplished daily rites of the evening, I was sitting on my holy seat (āsana) in the sacred place of worship (pūjā-gṛha) enveloped in darkness. (3)

I was thinking about a possible mistake in the Śiva-Prārthanā verse, composed by me the same morning, suddenly (there appeared) divine form. (4)

Wearing rags hanging on one side down upto His knees, possessed of long ears, the pits whereof were covered with the hair (grown thereon) and possessing the beauty of the (full blooming) moon. (5)

The whole of His physique was adorned with the excessively curly hair and the corners of his eyes were more shining as also moving than the lightning. (6)

A certain great soul (Mahātmā—possessed of the aforesaid qualities) appeared on the scene in front of me and holding His forefingure high, He thus spoke to me aloud. (7)

"O ! Intelligent one ! This verse is not incorrect and hence do not amend it. In a compound (Samāsa in Baddhādara-karam) thus what mistake do you visualise". (8)

Having proclaimed thus, He, who, once again looked at me with affection, unnoticingly as also with the flash of the lightning disappeared at once. (9)

Even though I do not know His name and whereabouts, yet reminded of His personality and the speech (verdict) again and again, I offer my salutations (praṇāma) always to Him with devotion. (10)

This episode took place in the Mādhva (Vaiśakha) month of the Vikrama era 1990, when I was residing in the Dharma-sabhābhavana of the Nālāgaḍha (Himachal Pradesh). (11)

—Ācārya Amṛtavāgbhava

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद
श्री आचार्य चरण

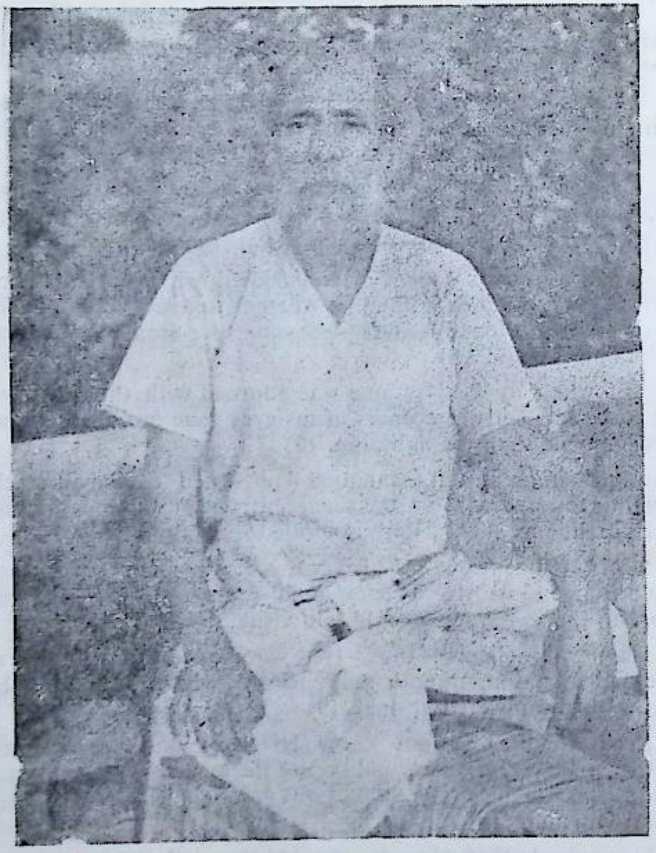

प्रातः स्मरणीय
श्री श्री गुरुदेव अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

श्री सिद्धमहामन्त्र

प्रभो ! शम्भो ! दीनं
विहितशरणं त्वच्चरणयो-
र्भवारण्यादस्माद्विषम-
विषयाशीविषवृतात् ।
समुद्धृत्य श्रद्धा-
विधुरमपि बद्धादरकरं
दयादृष्टया पश्यन्निज-
तनयमात्मीकुरु शिव !

॥ अर्थ ॥

हे सर्वशक्तिमान् ! समस्त संसार का कल्याण करने वाले कल्याणरूप भगवान् शंकर ! आपके चरणों में मैं दीन भाव से आया हूँ। विषयरूपी भयङ्कर विषधर सर्पों से भरे हुये इस संसाररूपी जंगल से बाहर निकाल कर अपनी दयादृष्टि से देखते हुए आप मुझ अपने पुत्र को अपना आत्मीय बना लीजिए। यद्यपि श्रद्धा आदि का मुझे ज्ञान नहीं है, तथापि चारों ओर से भयभीत होकर हाथ जोड़े हुए मैं आपकी शरण में आया हूँ, अतः इस दीन पुत्र को हे शिव ! बस अब तो अपना ही लीजिए ॥१॥

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

श्री १०८ मान् आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज

यह चित्र इस परशिव-प्रार्थना के रचनाकाल (संवत् १९९०) का है।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ŚRIPARA—ŚIVA—PRĀRTHANĀ
(THE SIDDHA-MAHĀMANTRA)

प्रभो ! शम्भो ! दीनं विहितशरणं त्वच्चरणयो-
र्भवारण्यादस्माद्विषमविषयाशीविषवृतात् ।
समुद्धृत्य श्रद्धाविधुरमपि बद्धादरकरं
दयादृष्टया पश्यन्निजतनयमात्मीकुरु शिव! ॥

Prabho Śambho Dīnam Vihitaśaraṇam Tvaccarrṇayor-
Bhavāraṇyādasmād Viṣamaviṣay Āśīviṣavṛtāt.
Samuddhṛtya Śraddhāvidhuramapi Baddhādarakaram
Dayādṛśṭyā Paśyannijatanayamātmīkuru Śiva.

—O Lord ŚAMBHU (Śiva) ! I have humbly taken refuge in your lotus-feet, take me out of this worldly jungle full of deadly venomous serpents in the form of sense-objects. Though devoid of faith but with reverendly folded hands, casting Thy kind glances (on me), O Lord Śiva ! accept me, Thy son.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

श्री पञ्चस्तवी

द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। यह प्रथम लघुस्तवकी ६०० वर्ष से भी अधिक प्राचीन संस्कृत टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद के साथ मुद्रित है। शेष चार स्तोत्र मूलमात्र हैं। साथ ही इस संस्करण में 'श्रीमहानुभवशवितस्तव' भी दिया गया है। कागज और छपाई बहुत उत्तम है। डाक-व्यय अलग। मूल्य १.००।

श्री राष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवाद-सहित

राष्ट्रवादी ही आर्य है। आर्य ही शान्ति की स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयों का है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं।

अभारतीय भारत के अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रीय नहीं। हम संक्रांति का सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिये जो राष्ट्र को परतन्त्र बनाये।

राष्ट्रिय राष्ट्र के पुत्र होते हैं, पति नहीं

भारतीय अपने आप को हिन्दू मानने में गौरव का अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्श के विपरीत क्रान्ति किंक्रान्ति है संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावों से स्नेह करते हैं तो "श्रीराष्ट्रालोक" अवश्य पढ़िये।

श्री राष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्श का एक जीवन शास्त्र है

राष्ट्रप्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मंगाइये।

मूल्य १) रु० मार्ग-व्यय अलग।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

॥ श्रीः ॥

श्रीसिद्धमहारहस्यम्

श्रीमदानन्दवनप्रसूनमाला का यह एक अत्यन्त सुगन्धित प्रथम दिव्य पुष्प है। "आधिदैविक जगत् के लिये यह एक अमूल्य उपहार है" ऐसी विशिष्ट विद्वानों की सम्मति है। दैवी उन्नति के अभिलाषी इसको पढ़कर लाभान्वित हों।

अन्य ग्रन्थ

१. श्रीराष्ट्रालोकः	मुद्रित तृतीय संस्करण मूल्य १) रु.
२. श्रीआत्मविलास	द्वितीय संस्करण सप्रे में
३. श्रीत्रिगुणेश्वर-शिवस्तोत्रम्	मुद्रित
४. श्रीसूक्तिलहरी	"
५. श्रीस्वाध्यायमहिम स्तोत्र	"
६. श्रीरामाश्वघाटीचतुष्टयम्	"
७. श्रीअवधूताभिवादनम्	"
८. श्रीवैद्यान्प्रति	"
९. श्रीमन्दाक्रान्ता स्तोत्र	"

निरुपमा प्रिन्टर्स, लड्डूघाटी पहाड़गंज दिल्ली।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

॥ श्रीः ॥

श्रीमदमृतग्रन्थमाला के सात पुष्प

१. श्री महानुभवशक्तिस्तवः —संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या सहित मूल्य ५० पैसे।

२. श्रीपरशुरामस्तोत्रम् —राष्ट्रभाषानुवाद सहित सचित्र चतुर्थ संस्करण अमूल्य।

३. श्रीश्रीविंशतिकाशास्त्रम् —दो संस्कृत व्याख्याओं तथा एक हिन्दी व्याख्या के साथ मूल्य ४) रु० ७५।

४. श्रीसप्तपदीहृदयम् —संस्कृत, हिन्दी, इंग्लिश अनुवाद के साथ मूल्य १)

५. श्री सञ्जीवनीदर्शनम् —हिन्दी भाषान्तर सहित मूल्य १) रु०

६. श्रीसंक्रान्तिपञ्चदशी —राष्ट्रभाषा गद्यपद्यानुवाद सहित मूल्य २) रु०

श्री ग्रन्थमाला के दो पुष्प

२. श्रीपञ्चस्तवी —प्रथमस्तव संस्कृत व्याख्या तथा हिन्दी भाषान्तर के साथ मूल्य १.०० रु०।

१. श्रीललितासहस्रकाव्यम् —हिन्दी भाषानुवाद के साथ मूल्य ५) रु० २५ पैसे

श्रीमदानन्दवनप्रसूनमाला के दो पुष्प

१. श्रीसिद्धमहारहस्यम् मूल्य २ रुपया

२. श्रीमदमृतसूक्तिपंचाशिका मूल्य ३ रुपया

श्री पं० बलजिन्नाथ शास्त्री-
M. A. Ph.D. विरचित
संस्कृत व्याख्या सहित

प्राप्ति स्थान :
श्री पं० गोविन्दजी मिश्र
चौबुर्जा, भरतपुर।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri